

Khana Me Barakat Paane Ke Tarooze (Hindi)

एकसप्ताह प्रिन्स : 285
Weekly Booklet : 285

अमीर अहले सुन्नत امير اهل السنه की किताब "फैजाने सुन्नत" की
एक किस्त बनाम

खाने में बरकत पाने के तरीके

(किस्त : 14)



खाने के किस किससे में बरकत है ? 05

खाने के किस किससे बरकत पाने के 07

गुरे की पधरी कैसे निकली ? 10

गर्म खाने के नुकसानात 11

संज्ञे कोकर, अमीर अहले सुन्नत, रॉमिने दासे इलाही, इमरते इलाहा बीनान अह किलत

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रजवी محمد ابي

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खाने में बरकत पाने के तरीके⁽¹⁾

दुआए अत्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 14 सफ़हात का रिसाला : “खाने में बरकत पाने के तरीके” पढ़ या सुन ले उसे खाने का एहतिराम करने और हमेशा हलाल खाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा । امين ياجلا خاتم النبيين صل الله عليه واله وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुसलमान जब तक मुझ पर दुरूदे शरीफ़ पढ़ता रहता है फ़िरिशते उस पर रहमतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा । (ابن ماجه، 1/490، حديث: 907)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

गिरी हुई रोटी खाने की फ़ज़ीलत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक की रहमत बहुत बड़ी है बा'ज अवक़ात ब ज़ाहिर अमल बहुत छोटा होता है मगर उस की फ़ज़ीलत बहुत ज़ियादा होती है । जैसा कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन उम्मे हराम رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है, “रोटी का एहतिराम करो कि वोह आस्मान व ज़मीन की बरकात से है । जो शख्स दस्तर ख़्वान से गिरी हुई रोटी को खा लेगा उस की मग़िफ़रत हो जाएगी ।” (جامع صغير، ص 88، حديث: 1426)

① ... येह मज़मून “फ़ैज़ाने सुन्नत” सफ़हा 265 ता 283 से लिया गया है ।

سُبْحَانَ اللَّهِ ! प्यारे इस्लामी भाइयो ! काश ! हम थोड़ी सी झिझक उड़ा दें और दस्तर ख़ान पर गिरी हुई रोटी और चावल के दाने वगैरा उठा कर खालिया करें और मग़िफ़रत के हक़दार ठहरें ।

तालिबे मग़िफ़रत हूँ या अल्लाह बख़्श दे बहरे मुस्तफ़ा या रब !

रोटी के टुकड़े की हिकायत

एक मरतबा अब्दुल्लाह बिन उमर **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا** ने ज़मीन पर रोटी का टुकड़ा पड़ा देखा तो गुलाम से फ़रमाया, “इसे साफ़ कर के रख दो ।” जब गुलाम से शाम को इफ़तार के वक़्त वोह टुकड़ा मांगा, उस ने अर्ज़ की, “वोह तो मैं ने खा लिया ।” फ़रमाया, “जा तू आज़ाद है क्यूं कि मैं ने ताजदारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से सुना है, “जो रोटी का पड़ा हुआ टुकड़ा उठा कर खा लेता है तो उस के पेट में पहुंचने से पहले ही अल्लाह पाक उस की मग़िफ़रत फ़रमा देता है ।” अब जो मग़िफ़रत का हक़दार हो गया मैं उस को गुलाम किस तरह बनाए रखूँ ?

(تتمية الغافلين، ص 348، حديث: 514)

दीनी सोच

سُبْحَانَ اللَّهِ ! हमारे बुजुर्गों की भी कैसी दीनी सोच हुवा करती थी कि गिरी हुई रोटी खा कर गुलाम मग़िफ़रत का हक़दार हो गया तो आका ने भी अपनी गुलामी से आज़ाद कर दिया । या रब्बे मुस्तफ़ा ब तुफैले मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हमें भी मदनी सोच और सुन्नतों से हक़ीक़ी महब्वत अता फ़रमा और हमें भी तौफ़ीक़ दे कि जब ज़मीन पर रोटी का टुकड़ा पड़ा देखें, अदब से उठा कर चूम कर साफ़ कर के खा लेने की सआदत हासिल कर लिया करें । या इलाही ! सुन्नतों पर अमल के मुआमले में हमारी झिझक उड़ जाए और हमारी मग़िफ़रत फ़रमा । **أَمِينَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ।

सुन्नतों से मुझे महब्वत दे मेरे मुर्शिद का वासिता या रब !

दस्तर ख़वान बढ़ाओ !

बुजुर्गों का मा'मूल यह है कि खाने से फ़ारिग़ होने के बा'द यह नहीं कहते कि “दस्तर ख़वान उठाओ” बल्कि कहते हैं, “दस्तर ख़वान बढ़ाओ” या “खाना बढ़ाओ।” यह कहने में दस्तर ख़वान बढ़ने और खाना बढ़ने और बरकत, फ़राखी और वुस्अत की जिम्नन दुआ होती है।

(सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 566, मुलख़वसन)

जब मैं ने रिसाला भयानक ऊंट पढ़ा....।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दोनों जहां की बरकतें पाने के लिये अशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। दा'वते इस्लामी की बरकतों के क्या कहने ! कोलकाता (हिन्द) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा अर्ज़ करता हूं, उन का कहना है, वोह सुन्नतों भरी जिन्दगी से बहुत दूर एक फ़ैश्नेबल नौ जवान थे, एक रात घर की तरफ़ आते हुए अस्नाए राह इमामों की बहारें नज़र आईं, वोह क़रीब गए तो पता चला कि मुम्बई से दा'वते इस्लामी वाले अशिक़ाने रसूल का मदनी क़ाफ़िला आया हुवा है जिस के सबब यहां सुन्नतों भरा इज्तिमाअ हो रहा है। उन के दिल में आया कि येह लोग तवील सफ़र कर के हमारे शहर कोलकाता आए हैं, इन को सुनना चाहिये लिहाज़ा येह इज्तिमाअ में शरीक हो गए।

इख़िताम पर इन हज़रात ने मक्तबतुल मदीना के रिसाले बांटने शुरूअ किये, खुश क़िस्मती से एक रिसाला उन के हाथ में भी आ गया, उस पर लिखा था, भयानक ऊंट। वोह घर आ गए कल पढ़ूंगा येह ज़ेहन बना कर रिसाला रख दिया और सोने की तय्यारी करने लगे, सोने से क़ब्ल यूंही रिसाला भयानक ऊंट का जब वरक़ पलटा तो उन की नज़र इस इबारत पर पड़ी, “शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर येह रिसाला ज़रूर पढ़ लीजिये ۞ شَاءَ اللهُ

आप के अन्दर मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा ।” इस जुम्ले ने उन की ज़बर दस्त रहनुमाई की उन्होंने ने सोचा, वाक़ेई शैतान मुझे येह रिसाला कहां पढ़ने देगा, कल किस ने देखी है ! नेकी में देर नहीं करनी चाहिये, इस को अभी पढ़ लेना चाहिये, येह सोच कर उन्होंने ने पढ़ना शुरू किया, वोह कहते हैं मुझे उस पाक परवर्दगार की क़सम जिस के दरबारे आली में हाज़िर हो कर बरोज़े क़ियामत हिसाब देना पड़ेगा ! जब मैं ने रिसाला भयानक ऊंट पढ़ा तो उस में कुफ़ारे नाबकार की जानिब से सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर तोड़े जाने वाले मज़ालिम का पुरसोज़ बयान पढ़ कर मैं अशकबार हो गया, मेरी नौद उचट गई, काफ़ी देर तक मैं रोता रहा । रातों रात उन्होंने ने अज़म किया कि सुब्ह हाथों हाथ मदनी काफ़िले में सफ़र करूंगा ।

जब सुब्ह वालिदैन की खिदमत में अर्ज़ की तो उन्होंने ने बखुशी इजाज़त मर्हमत फ़रमा दी और वोह तीन दिन के लिये आशिक़ाने रसूल के साथ मदनी काफ़िले के मुसाफ़िर बन गए, काफ़िले वालों ने उन्हें बदल कर क्या से क्या बना दिया ! वोह नमाज़ी बन कर पलटे, इमामा शरीफ़ के ताज से सर सज गया, तन सुन्नतों भरे लिबास से आरास्ता हो गया । उन की मां ने जब उन्हें तब्दील होता देखा तो बेहद खुश हुई और ख़ूब दुआओं से नवाज़ा, अज़ीज़ व रिश्तेदार सब उन से खुश हो गए । आजकल दा'वते इस्लामी की एक तहसील मुशावरत के खादिम (निगरान) की हैसियत से हस्बे तौफ़ीक़ सुन्नतों की धूमें मचाने की सआदत पा रहे हैं ।

आशिक़ाने रसूल लाए जन्नत के फूल आओ लेने चलें काफ़िले में चलो

भागते हैं कहां आ भी जाएं यहां पाएंगे जन्नतें काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّد

रिसाले तक्सीम फ़रमाइये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल ने एक बे नमाज़ी मॉडर्न नौ जवान को कहां से कहां पहुंचा दिया ! येह भी मा'लूम हुवा कि **मक्तबतुल मदीना** की जानिब से शाएअ होने वाले सुन्नतों भरे रसाइल बांटने के बहुत फ़वाइद हैं, उस मॉडर्न नौ जवान ने भयानक ऊंट नामी रिसाला पढ़ा तो तड़प कर हाथों हाथ **मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बना और सर इमामा शरीफ़ से सज गया । लिहाज़ा अपने अज़ीजों के ईसाले सवाब के लिये, उर्सों और इज्तिमाअत, शादी ग़मी की तक़रीबात, जनाज़ा व बारात और जुलूसे मीलाद में सुन्नतों भरे रसाइल मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन हासिल कर के ख़ूब ख़ूब तक्सीम कीजिये, शादी कार्डज़ में भी एक एक रिसाला नत्थी कर दीजिये । अगर आप का दिया हुवा रिसाला पढ़ कर किसी का दिल चोट खा गया और वोह नमाज़ी और सुन्नतों का अ़ादी बन गया तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** आप का भी दोनों जहां में बेड़ा पार होगा ।

हर महीने जो कोई बारह रिसाले बांट दे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** वो जहां में उस का बेड़ा पार है

उंग्लियां चाटना सुन्नत है

हज़रते आ़मिर बिन रबीअ **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** से रिवायत है कि नबिय्ये पाक **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** तीन उंग्लियों से खाना तनावुल फ़रमाते और जब फ़रिग़ हो जाते तो उन्हें चाट लिया करते थे । (مَجْمَعُ الزَّوَادِ، 23/5، حَدِيث: 7923)

न मा'लूम खाने के किस हिस्से में बरकत है

हज़रते जाबिर **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** फ़रमाते हैं, “ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उंग्लियों और बरतन के चाटने का हुक्म दिया और फ़रमाया, “तुम्हें मा'लूम नहीं कि खाने के किस हिस्से में बरकत है ।”

(مُسْلِم، ص 1122، حَدِيث: 2023)

खाने की बरकतें हासिल करने का तरीका

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! आजकल मुसलमानों के खाने का अन्दाज़ देख कर ऐसा लगता है कि बहुत कम ही खुश नसीब ऐसे होंगे जो सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाते और इस की बरकतें पाते हों । बयान कर्दा हदीसे मुबारक में फ़रमाया गया, “तुम्हें मा'लूम नहीं कि खाने के किस हिस्से में बरकत है ।” लिहाज़ा हमें कोशिश करनी चाहिये कि खाने का एक ज़र्रा भी जाएअ न हो, हड्डी वग़ैरा को इस क़दर चूस चाट लेना चाहिये कि उस पर बोटी का कोई जुज़ और किसी किस्म के ग़िज़ाई असरात बाकी न रहें, ज़रूरतन रिकाबी में हड्डी को झाड़ लीजिये ता कि कोई दाना वग़ैरा अटका हो तो बाहर आ जाए और खाया जा सके, अगर हो सके तो खाने में पके हुए गर्म मसाले मसलन इलायची, काली मिर्च, लोंग और दारचीनी, वग़ैरा भी खा लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** फ़ाएदा ही होगा । अगर न खा सकें तब भी कोई गुनाह नहीं । बिरयानी वग़ैरा से साबित हरी मिर्चें निकाल कर फेंक देने के बजाए मुम्किन हो तो खाना शुरू करने से पहले ही उन्हें चुन कर महफूज़ कर लीजिये और आयिन्दा किसी खाने में पीस कर डाल दीजिये । अक्सर लोग मछली की खाल भी फेंक देते हैं इस को भी खा लेना चाहिये । अल ग़रज़ खाने के तमाम अज्ज़ा पर ग़ौर कर लिया जाए और उस की हर बे ज़रर चीज़ खा ली जाए । नीज़ उंग्लियां और बरतन इस क़दर चाटें कि उन में खाने के अज्ज़ा बाकी न रहें ।

उंग्लियां चाटने की तरतीब

हज़रते कअूब बिन उज़्रह رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरवरे काएनात **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को अंगूठा, शहादत वाली और दरमियानी उंगली मिला कर तीन उंग्लियों से खाते देखा । फिर मैं ने देखा कि सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

ने उन्हें पोंछने से पहले चाट लिया सब से पहले दरमियानी फिर शहादत वाली और फिर अंगूठा शरीफ़ चाटा। (مُجْمَعُ الرِّوَايَاتِ، 5/29، حَدِيث: 7941)

उंग्लियां तीन मरतबा चाटना सुन्नत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उंग्लियां तीन तीन बार चाटना सुन्नत है अगर तीन बार के बा वुजूद उंग्लियों पर गिज़ा चिपकी हुई नज़र आए तो ज़ियादा बार चाट लीजिये यहां तक कि गिज़ा का असर नज़र न आए। शमाइले तिरमिज़ी में है, “सुलताने दो जहां, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (खाने के बा'द) अपनी उंग्लियां तीन तीन मरतबा चाटते थे।”

(شَامِلُ تَرْذِي، ص 61، حَدِيث: 138)

बरतन चाटना सुन्नत है

सरदारो मक्कए मुकर्रमा, सुलताने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बरकत निशान है, “जो रिकाबी और अपनी उंग्लियों को चाट लेता है अल्लाह उस को दुन्या व आखिरत में आसूदा (सैर) रखता है।”

(مُعْجَمُ كَبِير، 18/261، حَدِيث: 653)

आखिर में बरकत ज़ियादा होती है

मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, “खाने के बरतन को न उठाया जाए यहां तक कि खाने वाला उस को चाट ले या किसी और को चटवा दे कि, “खाने के आखिर में बरकत (ज़ियादा) होती है।” (كُنُزُ الْعَمَالِ، 15/111، حَدِيث: 40824)

बरतन दुआए मग़िफ़रत करता है

हज़रते नुबैशा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया, “जो खाने के बा'द बरतन को चाट लेगा वोह बरतन उस के लिये इस्तिग़फ़ार करेगा।” (ابْنِ مَاجَه، 4/14، حَدِيث: 3271)

येह भी है कि वोह बरतन कहता है, “ऐ अल्लाह पाक ! इस को जहन्म से आज़ाद कर जिस तरह इस ने मुझे शैतान से नजात दी ।”

(क़त्लुलعمال, 15/111, حدیث: 40822)

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرमाते हैं, “सना हुवा (या’नी आलूदा) बरतन बिग़ैर साफ़ किये पड़ा रहे तो उस से शैतान चाटता है ।”

(मिरआतुल मनाज़ीह, 6/52)

बरतन चाटने की हिक़मतें

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرमाते हैं, “बरतन चाटने में खाने का अदब है, इस को बरबादी से बचाना है, बरतन यूं ही छोड़ देने से इस पर मक्खियां भिनभिनाती हैं, बरतन में लगे हुए खाने के अज्ज़ा مَعَادِ اللهُ नालियों, गन्दगियों में फेंक दिये जाते हैं, जिस से उस की सख़्त बे अदबी होती है। अगर एक वक़्त में हर फ़र्द चन्द दाने भी बरतन में छोड़ कर ज़ाएअ़ कर दे तो रोज़ाना कई मन खाना बरबाद होगा। ग़रज़ येह कि बरतन चाटने में कई हिक़मतें हैं ।”

(मिरआतुल मनाज़ीह, 6/38, मुलख़ब्सन)

ईमान अफ़रोज़ इर्शाद !

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, “पियाला चाट लेना मुझे इस से ज़ियादा महबूब है कि पियाला भर खाना तसहुक़ करूं ।” (या’नी चाटने में चूँकि इन्क़िसार है लिहाज़ा इस का सवाब उस सदके के सवाब से ज़ियादा है)

(क़त्लुलعمال, 15/111, حدیث: 40821)

मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, “जो रिक्काबी और अपनी उंग्लियां चाटे अल्लाह पाक दुन्या व आख़िरत में उस का पेट भरे ।” (या’नी दुन्या में फ़क्रो फ़ाक़ा से बचे, क़ियामत की भूक से महफूज़ रहे, दोज़ख़ से पनाह दिया जाए कि

दोज़ख़ में किसी का पेट न भरेगा)

(مُعْتَمَدٌ كَبِيرٌ، 18/261، حَدِيثٌ: 653)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब

हज़रते इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, “जो खाने का बरतन चाटे और धो कर उस का पानी पी ले उस को एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है।”

(احياء العلوم، 7/2)

धो कर पीने का तरीका

घ्यारे घ्यारे इस्लामी भाइयो ! सिर्फ़ खाने की रिकाबी ही को चाटना काफ़ी नहीं, जब भी किसी पियाले या गिलास वगैरा में चाय, दूध, लस्सी, फलों का रस (JUICE) वगैरा इस्ति'माल फ़रमाएं उन को भी चाटिये और धो कर पी लीजिये। इसी तरह सालन या किसी और ग़िज़ा का इज्तिमाई कटोरा, कड़ाही या पतीला ख़ाली हो चुका है या उस में मा'मूली सी ग़िज़ा बाक़ी रह गई है तो उस को और निकालने के चम्मच को भी मुम्किन हो तो साफ़ कर लीजिये उमूमन देगों, पतीलों और बड़े बरतनों के अन्दर कुछ न कुछ ग़िज़ा बाक़ी रह जाती है जो ज़ाएअ़ कर दी जाती है, ऐसा नहीं होना चाहिये जितना मुम्किन हो उस से ग़िज़ाई अज्ज़ा निकाल लीजिये एक दाना भी ज़ाएअ़ न होने दीजिये। यह भी हो सकता है कि उस को धो कर पानी जम्अ़ कर के फ़्रिज़ में रख लिया जाए और पकाने में इस्ति'माल कर लिया जाए, मगर यह सब तौफ़ीके इलाही से ही मुम्किन है। यह भी याद रहे कि बरतन या गिलास वगैरा को चाटने या धोने में यह एह़तियात ज़रूरी है कि उस से खाने के अज्ज़ा ख़त्म हो जाएं। अगर बरतन में खाने के अज्ज़ा लगे रहे तो यह धोना नहीं कहलाएगा। तजरिबा यह है कि एक बार धो कर पीने से उमूमन बरतन साफ़ नहीं होता लिहाज़ा दो या तीन बार पानी डाल कर अच्छी तरह ऊपरी कनारों समेत हर तरफ़ उंगली फिरा कर धो कर पियें तो बेहतर है।

धो कर पीने के बा'द बचे हुए क़तरे

धो कर पीने के बा'द भी रिकाबी या पियाले वगैरा में चन्द क़तरे बच जाते हैं लिहाज़ा उंगली से जम्अ कर के पी लीजिये, पानी या मशरूब पी कर गिलास या बोतल ब जाहिर ख़ाली हो जाने के बा वुजूद चन्द लम्हों के बा'द देखेंगे तो उस की दीवारों से उतर कर पेंदे में चन्द क़तरे जम्अ हो चुके होंगे, उन को भी पी लीजिये कि हृदीसे पाक में है, “तुम नहीं जानते कि खाने के किस हिस्से में बरकत है” काश ! इस तरह धो कर पीना नसीब हो कि खाने का वोह बरतन, लस्सी का गिलास या चाय का पियाला वगैरा ऐसा हो जाए कि शनाख़्त न हो सके कि इस में अभी कुछ खाया या शरबत वगैरा पिया गया है !

गुर्दे की पथरी कैसे निकली ?

दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से कई मसाइल हल हो जाते हैं और मुतअद्द अमराज़ का इलाज हो जाता है चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस तरह बयान है कि उन का 12 दिन का मदनी क़ाफ़िला वापसी पर किसी स्टेशन पर उतरा, क़ाफ़िले वाले इन्फ़िरादी कोशिश में मशगूल हुए, इस दौरान वहां एक इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई, वोह मदनी क़ाफ़िलों की बरकतें लूटने का अपना ज़ाती तजरिबा बयान करते हुए फ़रमाने लगे, वोह गुर्दे की पथरी के सबब सख़्त अज़िय्यत में थे, डॉक्टर ने ऑपरेशन का कहा था, दर्री अस्ना एक इस्लामी भाई ने मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए दिलासा दिया कि घबराइये नहीं मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर लीजिये, सफ़र में दुआ क़बूल होती है। अल्लाह पाक आप का मस्अला हल फ़रमा देगा। उन के महबूबत भरे अन्दाज़ ने दिल जीत लिया और येह तीन 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَجْعَلَ لِيْ سَفَرًا مَّعْرُوْمًا اَوْ مَدِيْنَةً مَّعْرُوْمَةً اَوْ مَدِيْنَةً مَّعْرُوْمَةً اَوْ مَدِيْنَةً مَّعْرُوْمَةً اَوْ مَدِيْنَةً مَّعْرُوْمَةً

निकल गई। इन्होंने जब डॉक्टर को बताया तो वोह हैरान रह गया क्यूं कि शायद इन की पथरी इस किस्म की थी कि बिगैर ऑपरेशन के इस का डॉक्टरों के पास इलाज नहीं था।

गर्चे बीमारियां तंग करे पथरियां पाओगे सिद्धहते क़ाफ़िले में चलो
घर में ना चाक़ियां हों या तंगदस्तियां पाएंगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ
गर्म खाना मन्ज़ है

हज़रते जाबिर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं, “नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया, “गर्म खाना ठन्डा कर लिया करो क्यूं कि गर्म खाने में बरकत नहीं होती।”

(مشترک، 4/132، حدیث: 7125)

खाना कितना ठन्डा किया जाए !

हज़रते जुवैरिया رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, रसूले मोहूतशम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खाने की भाप ख़त्म होने से पहले उसे खाने को ना पसन्द फ़रमाते।

(مجمع الزوائد، 5/13، حدیث: 7883)

गर्म खाने के नुक्सानात

घ्यारे घ्यारे इस्लामी भाइयो ! खाना ठन्डा कर के खाना चाहिये मगर येह ज़रूरी नहीं कि इतना ठन्डा कर दें कि जम कर बद मज़ा हो जाए बल्कि कुछ ठन्डा हो लेने दें कि भाप उठना बन्द हो जाए। हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَضِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, “खाने का क़दरे (या’नी कुछ) ठन्डा हो जाना और फूकों से ठन्डा न करना बाइसे बरकत है और इस तरह खाने में तक्लीफ़ भी नहीं होती।”

(میر آتول میناجیہ، 6/52) तेज़ गर्म खाने या ख़ूब गर्मा गर्म चाय या कॉफी वगैरा पीने से मुंह और गले के छाले, मे’दे में वरम वगैरा हो जाने का ख़तरा है। नीज़ उस पर फ़ौरन ठन्डा पानी पीना मसूदों और मे’दे को नुक्सान पहुंचाता है।

खाने में मखवी

खाने या पीने की किसी चीज़ में मखवी गिर जाए तो उस गिज़ा को फेंक देना इसराफ़ व गुनाह है मखवी को गो़ता दे कर निकाल दीजिये और वोह गिज़ा बिला तकल्लुफ़ इस्ति'माल कीजिये। चुनान्वे तबीबों के तबीब, अल्लाह के हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं, “जब खाने में मखवी गिर जाए तो इसे गो़ता दे दो (और फेंक दो) क्यूं कि इस के एक बाजू में शिफ़ा है और दूसरे में बीमारी, खाने में गिरते वक़्त पहले बीमारी वाला बाजू डालती है लिहाज़ा पूरी ही को गो़ता दे दो।”

(अबुदावुद, 3/511, حديث: 3844)

गोश्त नोच कर खाओ

मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान हज़रते बीबी आइशा सिदीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अ़लीशान है, “गोश्त को (खाते वक़्त) छुरी से मत काटो क्यूं कि येह अ़जमिय्यों का तरीका है और गोश्त दांतों से नोच कर खाओ क्यूं कि येह ज़ियादा लजीज़ और खुश गवार है।” (अबुदावुद, 3/511, حديث: 3844) अगर गोश्त का बड़ा टुकड़ा मसलन भूनी हुई रान वग़ैरा हो तो हस्बे ज़रूरत छुरी से काटने में मुज़ायका नहीं।

12 साल से गुमशुदा भाई मिल गया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतें सीखने और सिखाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी काफ़िलों में अ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र फ़रमाते रहिये, इल्मे दीन हासिल होने के साथ साथ إِنْ شَاءَ اللهُ दुन्या के मसाइल भी हल होते रहेंगे जैसा कि दा'वते इस्लामी का एक मदनी काफ़िला सुन्नतों भरे सफ़र पर था, उस में एक इस्लामी भाई ने बताया कि उन के बड़े भाईजान रोज़गार के सिल्सिले में बैरूने मुल्क गए हुए थे, आज 12 बरस हो गए उन का कोई अता

पता नहीं। उन के तीन बच्चों और उन बच्चों की वालिदा के अख़्वाजात उन के ज़िम्मे हैं और तंगदस्ती का आलम है, येह आशिक़ाने रसूल के साथ सफ़र में दुआ की निय्यत से मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। मदनी क़ाफ़िले के इख़िताम के तक़्ीबन एक हफ़्ते के बा'द एक मदनी मश्वरे में येह इस्लामी भाई शरीक हुए उन के जज़्बात क़ाबिले दीद थे, रो रो कर फ़रमा रहे थे, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से करम हो गया, 12 साल से मफ़क़ूदुल ख़बर (गुमशुदा) भाईजान का फ़ोन आ गया और उन्होंने ने इन्हें एक लाख 25 हज़ार रुपै भी रवाना किये हैं।

जो कि मफ़क़ूद हो वोह भी मौजूद हो **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ** चलें क़ाफ़िले में चलो

दूर हों सारे गुम होगा ख़बर का करम गुम के मारे सुनें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلٰى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

दुआ क़बूल न होने में भी हिक्मतें.....

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ इस तरह के कई वाक़िआत हैं जिन में क़ाफ़िलों में सफ़र कर के दुआ करने वालों की मुरादे पूरी हुई हैं, बहुत से ऐसे भी मिलेंगे जिन की मुरादे पूरी नहीं हुई। अगर कभी आप की दुआ की क़बूलिय्यत के आसार नज़र न भी आए तब भी **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहिये। कि बारहा ऐसा भी होता है कि हम जो कुछ मांग रहे हैं उस के न मिलने ही में हमारे लिये बेहतरी होती है जैसा कि मेरे आका आ'ला हज़रत के वालिदे गिरामी हज़रते अल्लामा मौलाना नकी अली ख़ान **رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ** "अहसनुल विआअ" में फ़रमाते हैं, हिक्मते इलाही है कि कभी तू बराहे नादानी कोई चीज़ उस से त़लब करता है और वोह बराहे मेहरबानी तेरी दुआ को इस सबब से कि तेरे हक़ में मुज़िर (नुक़सान देह) है, रद फ़रमाता है। मसलन तू जोयाए सीमो ज़र (या'नी दौलत का त़लब गार) है और

इस (के मिल जाने) में तेरे ईमान का ख़तरा है या तू ख़्वाहाने तन्दुरुस्ती व अफ़ियत (या'नी सिहहत त़लब करता) है और वोह इल्मे खुदा में (तेरे लिये) मूजिबे नुक्साने अफ़िबत (या'नी आख़िरत के नुक्सान का सबब) है। ऐसा रद क़बूल से बेहतर (या'नी ऐसी दुआ क़बूल न होना ही तेरे लिये मुफ़ीद है, तू इस आयते मुबारका,) ﴿عَسَىٰ أَنْ تُجِبُوا سِيَئَاتِكُمْ لَكُمْ خَيْرًا مِّنْهُنَّ﴾ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे हक़ में बुरी हो। (216: البقرة: 216) पर नज़र कर और इस रद (या'नी दुआ क़बूल न होने) का शुक्र बजा ला। कभी दुआ के बदले सवाबे आख़िरत देना मन्ज़ूर होता है। तू हुतामे दुन्या (या'नी दुन्या की ज़लील दौलत) त़लब करता है और परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ नफ़ाइसे आख़िरत (या'नी आख़िरत की उम्दा ने'मतें) तेरे लिये ज़ख़ीरा फ़रमाता है। येह जाए शुक्र है न कि मक़ामे शिकायत। (फ़ज़ाइले दुआ, स. 159)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़ेहरिस्त

| | | | |
|---|---|---------------------------------------|----|
| गिरी हुई रोटी खाने की फ़ज़ीलत | 1 | एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब | 9 |
| रोटी के टुकड़े की ह़िकायत | 2 | धो कर पीने का तरीका | 9 |
| दस्तर ख़्वान बढ़ाओ ! | 3 | गुर्दे की पथरी कैसे निकली ? | 10 |
| उंग्लियां चाटना सुन्नत है | 5 | गर्म खाना मन्अ है | 11 |
| न मा'लूम खाने के किस हिस्से में बरकत है | 5 | गर्म खाने के नुक्सानात | 11 |
| खाने की बरकतें हासिल करने का तरीका | 6 | खाने में मखबी | 12 |
| उंग्लियां चाटने की तरतीब | 6 | गोशत नोच कर खाओ | 12 |
| उंग्लियां तीन मरतबा चाटना सुन्नत है | 7 | 12 साल से गुमशुदा भाई मिल गया | 12 |
| बरतन चाटना सुन्नत है | 7 | दुआ क़बूल न होने में भी ह़िकमतें..... | 13 |
| ईमान अफ़रोज़ इर्शाद ! | 8 | ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ | ❀ |

अगले हफ्ते का रिसाला

